42

गोस्वामी तुलसीदास

प्रा.डॉ. शैलजा जायसवाल
अध्यक्षा, हिंदी विभाग,
कला विज्ञान व वाणिज्य महाविद्यालय, मनमाड, नासिक

गोस्वामी तुलसीदास जी का जन्म विक्रमी संवत् १५५४ की श्रावण शुक्ल सप्तमी को बाँदा जिले के राजापुर नामक ग्राम में हुआ था। इनके पिता का नाम आत्माराम दुबे तथा माता का नाम हुलसी था। महान रचना श्रीराम चरितमानस तुलसीजी की है। इसके अलावा विनय पत्रिका, दोहावली, कवितावली, गीतावली आदि अनेक भक्ति परक ग्रंथों की रचना भी तुलसीदास ने की। गोस्वामीजी श्री सम्प्रदाय के आचार्य रामानन्द की शिष्यपरम्परा में थे। इन्होंने समय को देखते हुए लोकभाषा में 'रामायण' लिखा। इसमें ब्याज से वर्णाश्रम धर्म, अवतारवाद, साकार उपासना, सगुणवाद, गो ब्राह्मण रक्षा, देवादि विविध योनियों का यथोचित सम्मान एवं प्राचीन संस्कृति और वेदमार्ग का मण्डन और साथ ही उस समय के अत्याचारों की आलोचना की गई है। तुलसीदासजी पंथ और सम्प्रदाय चलाने के विरोधी थे।

विनय पत्रिका तुलसी दास के २७९ स्तोत्र गीतों का संग्रह है। प्रारंभ के ६३ स्तोत्र और गीतों में गणेश, शिव, वार्वती, गंगा, यमुना, काशी, चित्रकूट, हनुमान, सीता और विष्णु के एक विग्रह बिन्दु माधव के गुणगान के साथ राम की स्तुतियाँ है। इस अंश में जितने भी देवी देवताओं के संबंध के स्त्रोत्र और पद आते हैं, सभी में उनका गुणगान करके उनसे राम की भक्ति की याचना की गई है।

विनय पत्रिका तो बस विनय पत्रिका ही है। इस अनुपम अद्वितीय ग्रंथ को पढ़कर हठात मुख से यह निकल पड़ता है कि 'न भूतो न भविष्यति' विनय पत्रिका में से सूक्तियाँ चुनने में सचमुच मैंने अनाधिकार चेष्टा ही की है। इस ग्रंथ को तो ज्यों का त्यों पूरा ही सुक्ति सुधा में रख देना चाहिए था।(१)

तुलसीदास जी काशी में उसी घाट पर रहने लगे थे। गोस्वामी तुलसीदास के ध्यान में जब हनुमानजी आए तो हनुमानजी ने ही उन्हें विनय के पदों की रचना करने को कहा। तब हनुमानची के आदेश से ही तुलसीदास ने विनय पत्रिका की रचना की और उसे भगवान राम के चरणों में समर्पित कर दिया। विनय पत्रिका गोस्वामी तुलसीदास की एक अनमोल कृति है। रचना प्रणाली, शब्द–विन्यास–पटुता, शैली, भाषा, भाव गाम्भीर्य, शब्द–चयन, चातुर्य तथा विषय प्रतिपादन –सौष्ठव के कारण विनय पत्रिका एक विरल प्रभविष्णु कृति हो गई है।

ऐसो कों उदार जग माहीं।
बिनु सेवा जो द्रवै दीन पर राम सरिस कोड नाही ।।
जो गति जोग विराग जतन करि नहीं पावन मुनि ज्ञानी।।
सो गति देत गीध सबरी कहु प्रभु न बहुत जिय जानी।।
जो संपत्ति दस सीस अस्य करि रावण सिव वहँ लीन्ही।
सो संपदा विभीषण कहँ अति सकुच सहित हरि दीन्ही।
तुलसीदास सब भांति सकल सुख जो चाहसि मन मेरो।
तो भजु राम राम काम सब पूरन करहि कृपानिधि तेरो।।

प्रस्तुत पद में तुलसी दासजी ने श्रीराम के अनंत गुणों का वर्णन किया है। प्रभु से बड़ा उदार भला इस जगत और कौन है। तुलसी दासजी अपनी समर्पण भावना व्यक्त करते हुए कहते हैं कि बिना किसी सेवा की अपेक्षा किए बिना ही भगवान अपने भक्तों पर कृपा कर देते हैं। राम के समान दयालु इस संसार में और कोई नहीं। भगवान की एक झलक पाने के लिए लोग योगी और बैरागी बनकर साधना करते हैं। फिर भी भगवान उन्हें दर्शन नहीं देते। वही भगवान अपने प्रिय भक्तों भले ही वे गरीब या तुच्छ ही क्यों न हो उन्हें बड़ी आसानी से दे देते है। प्रभु ने ही जटायू और शबरी पर भी कृपा की थी। रावण ने अपने दस सिरों को काटकर जो संपत्ती भगवान शिव से उपहार ली थी,